ISSN: 2349-4654
नाद-नर्तन जर्नल ऑफ डांस एण्ड म्यूज़िक
वर्ष : 8, सेमिनार विशेषांक, नवंबर 2019

वर्तमान समय में पंजाब का लोक संगीत

महिन्द्र कौर
असिस्टेंट प्रोफेसर, संगीत विभाग, आर्य पी.जी. कॉलेज, पानीपत

Paper recieved on : Sep 15, 2019, March 24, 2020, May 13, 2020, Accepted : May 28, 2020.

सार-संक्षेप

पंजाब एवं पंजाबी अपनी सभ्यता तथा संस्कृति के कारण सम्पूर्ण भारतवर्ष में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में चाहे वह युद्ध भूमि हो या जीवन संघर्ष, कृषि हो या कला क्षेत्र इनकी आगे बढ़ने की क्षमता सदैव कायम रही है। कला क्षेत्र में यहाँ आरम्भ से ही भिन्न-भिन्न विधाएँ प्रचलित रही हैं जिनमें पंजाबी लोक गाथाएँ भी अपना विशेष स्थान रखती हैं। हीर-रांझा, मिर्जा-साहिबा, सोहनी-महिवाल, राजा-रसालु, पुरन-भगत आदि से सम्बन्धित किस्से यहाँ आरम्भ से ही प्रचलित रहे हैं पंजाब में गाथा गायन का एक ऐसा समय था कि उच्च दर्जे पर इन लोकगाथाओं को सुना जाता था और श्रोताओं की संख्या भी बेशुमार थी। उस समय में ये जन साधारण के मनोरंजन का एक मात्र साधन थी परन्तु वर्तमान में इन गाथाओं का प्रचार-प्रसार अत्यन्त कम हो गया है। जिसके कारण धीरे-धीरे यह विलुप्त होने की कगार पर है। इस शोध-पत्र का उद्देश्य इन लोकगाथाओं के विलुप्त होने के मूल कारण को प्रस्तुत करना है तथा इनके अस्तित्व को बचाने सम्बधित कुछ सुझाव प्रस्तुत करना है। इस शोधपत्र के कार्य को पूर्ण करने हेतु मेरे द्वारा पंजाब के भिन्न-भिन्न स्थानों पर जाकर विभिन्न लोकगाथा कलाकारों से प्राप्त उनके साक्षात्कार को आधार बनाया गया है तथा यह बताने का प्रयास किया गया है कि क्यों वर्तमान समय में पंजाबी लोकगाथा अपने अस्तित्व को बनाए रखने में असक्षम है।

मुख्य शब्द : पंजाब, लोक संगीत, लोक गाथाएँ, हीर-राँझा, पॉप गीत

शोध-पत्र

प्रत्येक प्रदेश अपने लोकसंगीत से ओत-प्रोत हैं लोकसंगीत की परम्परा सदियों से चली आ रही है यह वह विधि है जिसके वास्तविक रूप में परिवर्तन करना व उसे लिपिबद्ध करना कठिन है। लोकसंगीत किसी स्थान विशेष की सभ्यता एवं संस्कृति का आधार है जिसमें उस स्थान विशेष की भाषा रीति-रिवाज तथा वेशभूषा के स्पष्ट दर्शन होते है।

लोक साहित्य कोश खण्ड के अनुसार—लोकसंगीत 'लोक' तथा 'संगीत' दो शब्दो का मेल है लोक का अर्थ है—जन-साधारण तथा 'संगीत' गायन वादन तथा नृत्य तीनों का मिश्रण है अर्थात जन-साधारण द्वारा रचित लोकगीत, लोकधुनें, लोकवाद्य और लोक-नृत्य का समूह ही लोकसंगीत है। यह संगीत पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ता हुआ एक विशाल रूप धारण कर समाज का अभिन्न अंग बन जाता है।[1]

प्रत्येक प्रांत का अपना भिन्न लोकसंगीत है जहाँ तक पंजाब प्रांत का सम्बन्ध है वहाँ लोकसंगीत का अपना एक समृद्ध भण्डार है पंजाबी लोकसंगीत भी वहाँ के जन-जीवन पर आधारित है पंजाबी अपने जीवन के हर पहलू में नाचते-गाते नजर आते है। वहीं इनके लोक गीत भी अपनी अनोखी मस्ती और उल्लास के लिए जगत प्रसिद्ध है। पंजाबी लोक गीतों के यूँ तो अनेक प्रकार प्रसिद्ध है परन्तु सरलता की दृष्टि से विद्वानों द्वारा इसे दो भागों में विभाजित कर दिया गया है। जिनमें प्रथम श्रेणी में मुक्तक लोक गीत तथा द्वितीय श्रेणी में प्रबन्धात्मक लोकगीतों को रखा गया है जिसका वर्णन गीता पैंतल द्वारा लिखित पुस्तक 'पंजाब की संगीत परम्परा' में किया गया है इनका विस्तार पूर्ण वर्णन इस प्रकार है—

प्रथम श्रेणी जो कि मुक्तक लोकगीतों की है इसे पुनः तीन भागों में विभाजित किया गया है जो निम्नत: है।

1. **समयचक्र से सम्बन्धित लोकगीत**—इन लोकगीतों के अंतर्गत पंजाब के पर्वो, त्यौहारों और ऋतुओं से सम्बन्धित लोकगीत आते हैं।
2. **संस्कार सम्बन्धी लोकगीत**—इन गीतों के अंतर्गत जीवन तथा मृत्यु से सम्बन्धित लोकगीत आते हैं जैसे—विवाह संस्कार से सम्बन्धित गीत जिनमें सुहाग, घोड़ीयाँ, सिट्ठनीयाँ आदि शामिल हैं।
3. **स्कुट लोकगीत**—यह लोकगीत किसी विशेष श्रेणी के अंतर्गत नहीं आते लेकिन इनका पंजाब के जन-जीवन से अटूट सम्बन्ध है इन गातों के अंतर्गत टप्पे, माहीआ, बोलियाँ, ढोले, जिदुआ, किकली जुगनी आदि लोकगीत आते हैं।

दूसरी श्रेणी प्रबन्धात्मक लोकगीतों की है जिनके अंतर्गत वीर काव्य तथा प्रेम काव्य आता है वीर रस काव्य में पंजाबी साहित्य में वर्णित वारों का वर्णन मिलता है। प्रेम-काव्य के अंतर्गत पंजाब में प्रचलित हीर-रांझा, मिर्जा-साहिबा, सस्सी-पुन्नु, सोहनी-महिवाल आदि की गाथाएँ सम्मिलित हैं।[2]

पंजाब में इन लोकगाथाओं का गायन डूम-भाट, मिरासी तथा कविशरों द्वारा किया जाता था। पंजाब के मेलों, त्यौहारों, पर इनके द्वारा जन-साधारण का मनोरंजन किया जाता था। अन्य प्रचलित लोकगीत जैसे सुहाग, घोड़ीयाँ सिट्ठनीयाँ आदि का गायन स्त्रियों द्वारा ढोलकी के साथ शादी-विवाह के अवसर पर किया जाता था। उस समय इन गीतों का संचार मौखिक रूप में पीढ़ी दर पीढ़ी किया जाता था क्योंकि इन्हें लिखित रूप देने के पर्याप्त साधन उपलब्ध नहीं थे। परन्तु वर्तमान समय में पंजाबी लोकसंगीत की स्थिति दयनीय है अब यह लोकगीत हमारे हाथों से रेत की भाँति फिसल रहे हैं। वर्तमान पीढ़ी इन लोकगीतों से अपरिचित है जिसका कारण है पश्चिमी सभ्यता का हमारी संस्कृति पर हावी होना। इस विषय सम्बधित तथ्य मुझे विजय यमला (प्रपोत्र लाल चन्द यमला जी) के साक्षात्कार द्वारा प्राप्त हुए। उनके द्वारा भी यह बताया गया कि हमारी युवा पीढ़ी द्वारा अपने पंजाबी लोकगीतों को छोड़ कर पंजाबी पॉप को अपनाया जा रहा है। जो इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि किस तरह से पश्चिमी सभ्यता पूर्ण रूप से पंजाबी सभ्यता पर अपना अधिकार कर चुकी है।[3]

शोधार्थी का अनुभव है कि आज यह लोकगीत केवल रिकार्डिंग रूप में ही डी जे पर चला दिए जाते हैं और यह भी तब तक ही जीवित है जब तक इन्हें सुनने वाली पीढ़ी जीवित हैं। आज लोकगीतों का वास्तविक रूप बिगड़ चुका है परिवर्तन के नाम पर अश्लीलता, विकार भरी जा रही है इन लोकगीतों में पश्चिमी संगीत का मिश्रण कर उसे रिमिक्स का नाम दे दिया गया है इसके अतिरिक्त लोकगीतों मे रैप के नाम पर अग्रेंजी शब्दों को बढ़ावा दिया जा रहा है जो हमारे लोकसंगीत पर पश्चिमी सभ्यता हावी होने का स्पष्ट सूचक है।

इसके अतिरिक्त संगीत निर्देशक 'अली अकबर खां' (पंजाबी विश्वविद्यालय में कार्यरत) द्वारा भी यही बताया गया है कि किस प्रकार वर्तमान में लोकगीतों की बनावट के साथ-साथ उनकी पेशकारी के भी ढंग बदल चुके हैं समय के साथ हर चीज में परिवर्तन होना स्वाभाविक है इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता। परन्तु परिवर्तन के नाम पर लोकगीतों का स्वरूप बिगाड़ना, उनमें पश्चिमी संगीत का मिश्रण करना धीरे-धीरे हमारे पंजाबी लोकसंगीत को खत्म कर रहा है। जैसा कि पहले भी कहा जा चुका है कि लोकसंगीत किसी भी प्रदेश की संस्कृति का आइना होता है, वहाँ प्रचलित लोक-वाद्य, लोक-नृत्य, गहने तथा रंग बिरंगे वस्त्र पंजाब को एक अलग पहचान दिलवाते हैं परन्तु पश्चिमी सभ्यता के चलते इन सबका अस्तित्व खतरे में आ गया है यही नहीं हमारे लोक-वाद्यों के साथ भी छेड़खानी की जा रही है उनके भी इलैक्ट्रॉनिक रूप का अविष्कार हो चुका है। जिसके कारण वाद्यों का मूल अस्तित्व पीछे रह गया है। लोक-नृत्य में आज लोक नाच को छोड़कर डी.जे. पर भिन्न-भिन्न प्रकार के नाच का प्रस्तुतीकरण किया जाता है यह लोक-नाच अब केवल युवा-प्रतिस्पर्धा के दौरान ही देखने को मिलते है। लोक-वाद्यों, सारंगी, शहनाई, ढोल, अलगोजे इन सब को छोड़कर आज ड्रम-सैट, की-बोर्ड, सिंथेसाइजर और गिटार जैसे वाद्यों का प्रयाग किया जा रहा है क्योंकि सिंथेसाइजर मे आप किसी भी वाद्य की आवाज को बजा सकते हैं।[4]

इस बात में कोई संशय नहीं है कि आज पंजाबी लोकगीतों का स्थान पंजाबी पॉप संगीत ने ले लिया है आज लोकगीत उतने प्रसिद्ध नहीं है जितने पॉप-गीत हैं। इस पॉप-संगीत मे गीत के शब्दों की बजाय उसकी तेज लय पर ज्यादा ध्यान दिया जाता है ऐसे-ऐसे गीत सुनने को मिलते हैं जिनका कोई अर्थ नहीं और न ही एक से अधिक बार सुने जा सकते हैं उदाहरण के तौर पर पंजाबी पॉप गायक हनी-सिंह द्वारा गाया गया गीत—'चार बोतल वोडका काम मेरा रोज का' जिसे आज की पीढ़ी सुनती है और पसंद करती है आज के गायकों द्वारा युवा पीढ़ी को 'शराब' से रूबरू करवाया जा रहा है कहीं न कहीं ये गीत हमारी पंजाबी सभ्यता व संस्कृति को अत्यन्त खराब करते जा रहे हैं जिसका सबसे बड़ा कारण मीडिया है, आज मीडिया इतना प्रभावशाली बन चुका है कि वह जिसे चाहे मानव की जरूरत बना दे। आज के पूँजीवादी युग में हर चीज का व्यापारीकरण हो रहा है तो हमारे गीत, नाच, खानपान पहरावा अर्थात, समाज सभ्यता तथा संस्कृति भी इसे अपना रही हैं।

पंजाब के पटियाला जिले में अपनी सांगीतिक अकादमी चला रहे—'उजागर सिंह अंटाल' जी से बातचीत के दौरान यही पहलू समक्ष आए कि आज के युवकों द्वारा अपने आर्थिक हालात को सुधारने व धन कमाने के लिए लोकसंगीत को व्यापार के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा है। आज साधारण कलाकार भी स्टूडियों में जाकर साधारण लोकगीतों को कलात्मक पक्ष देकर अपनी कैसेट रिलिज कर देते हैं। जिससे पारम्परिक धुनों का अस्तित्व खत्म होता जा रहा है। पश्चिमी वाद्यों का अत्याधिक प्रयोग होने के कारण लोक-वाद्यों का अस्तित्व धीरे-धीरे कम होता जा रहा है। लोक वाद्यों जैसे ढोल, ढोलक, नगाड़ा, तुम्बी, घड़ा, इकतारा, अलगोजे, वंजली आदि का स्वतन्त्र प्रयोग न करके असली आवाज को समाप्त कर उसके अनुरूप ध्वनि बजा लेते हैं[5] इन सभी तथ्यों पर दृष्टिपात करने पर समक्ष आता है कि किस प्रकार से लोक वाद्यों और लोकगीतों की मौलिकता खत्म होती जा रही है जिससे पंजाब की लोकविधा को बहुत बड़ा धक्का लगा है।

इसी विषय पर मेरी वार्तालाप 'खालसा कॉलेज फॉर वूमैन', अमृतसर मे संगीत गायन की प्रोफेसर जतिन्द्र कौर से हुई, उन्होंने पंजाबी लोकसंगीत की वर्तमान स्थिति पर अपना भिन्न मत प्रस्तुत किया और पंजाबी लोकसंगीत का पुन: विकसित हुआ स्वरूप मेरे समक्ष रखा। उनके दृष्टिकोण के अनुसार एक दौर ऐसा अवश्य आया था जब पंजाब में लोकसंगीत का स्थान पॉप संगीत ने ले लिया था परन्तु अब ऐसा नहीं है लोकसंगीत फिर से अपना स्वरूप पंजाब में कायम करता जा रहा है।

उन्होंने बताया कि अब शादी विवाह के अवसर पर महिला संगीत के दौरान गायक अथवा गायिका को बुलाया जाता है और उनके द्वारा सुहाग घोड़ीयाँ आदि सभी लोकगीत प्रस्तुत किए जाते हैं इतना ही नहीं अब महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में भी युवा प्रतिस्पर्धा के दौरान लोकगीतों तथा लोकवाद्यों को अपनाया जा रहा है। युवा प्रतिस्पर्धा में पंजाबी वाद्यवृन्द में सभी वाद्यों को प्रयोग किया जाता है जिसमें तुम्बी, ढोल, बुगदु आदि शामिल हैं। इतना ही नहीं महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों में लोकसंगीत की कक्षाएँ अलग से आयोजित की जा रही हैं।[6]

परन्तु इससे हम यह कदापि नहीं कह सकते हैं कि लोकगीत पंजाब में पुन: अपनी छवि को स्थापित कर रहे हैं। यह अत्यन्त सराहनीय है कि पंजाब के संगीत प्रेमियों द्वारा लोकगीतों को फिर से प्रचलित करने की तरफ प्रयास किया जा रहा है और इस प्रयास द्वारा क्या सच में लोकगीत व लोकवाद्य अपना मौलिक रूप स्थापित कर पाएँगे यह कहना अत्यन्त कठिन है।

इसी विषय पर कुछ जानकारी मुझे प्रोफेसर शरण कौर जो कि गवर्नमेंट कॉलेज लुधियाना में संगीत वादन के पद पर कार्यरत हैं उनके द्वारा प्राप्त हुई। वे महाविद्यालय में अवश्य ही संगीत वादन के पद पर कार्य कर रही हैं। परन्तु रेडियो स्टेशन व जलंधर दूरदर्शन पर उनके द्वारा भी लोकगीतों का प्रस्तुतीकरण किया जाता है। उन्होंने ने भी यही कहा कि पंजाबी लोकगीत हमारी विरासत है और हम अपनी विरासत को इस प्रकार से खत्म नहीं होने दे सकते। पंजाब में पंजाबी लोकगीतों और लोकवाद्यों को ज्यादा से ज्यादा प्रचार में लाने के लिए सदैव प्रयास करते रहते हैं और महाविद्यालयों के विद्यार्थियों को भी लोकगीतों को गाने और उन्हें अपनाने की प्रेरणा दी जाती है यह प्रयास हम सदैव करते रहेंगे।[7]

पंजाबी लोकसंगीत के विषय में जितना भी कहा जाए कम है क्योंकि पंजाब अपने लोकसंगीत के लिए हमेशा से एक अलग पहचान रखता आया है इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि लोकसंगीत के स्वरूप में परिवर्तन हुआ है परन्तु समय की माँग को देखते हुए परिवर्तन सम्भावित था और जो हुआ भी है क्योंकि वर्तमान में पश्चिमी सभ्यता पंजाबी जनमानस को इस प्रकार प्रभावित कर चुकी है कि उसे छोड़ पाना अत्यन्त कठिन है यह उनके आम जन-जीवन का हिस्सा बन चुकी है जिसके बिना शायद पंजाबी जनमानस अपने जीवन की आज कल्पना भी नहीं कर सकता जो नि:संदेह अत्यन्त सोचनीय है अंतत: यही कहना चाहूँगी कि पंजाबी लोकसंगीत को पुन: स्थापित करने के लिए फिर से एक बार पुराने पंजाब में वापिस जाना होगा जो कदापि सम्भव नहीं है क्योंकि वर्तमान में पंजाबी जनमानस इतना आगे पहुँच चुका है कि पुन: उसी दिशा में लौटना सम्भव ही नहीं है न केवल पंजाब अपितु किसी भी विषय में पुन: लौटना असम्भव है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. गौतम, सुरेश, भारतीय लोकसाहित्य कोष, (खण्ड-1)संजय प्रकाशन, जे. एम.जी. हाऊस अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली, पृष्ठ 393
2. पैंतल, गीता, पंजाब की संगीत परम्परा, राधा पब्लिकेशन, अन्सारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली, पृष्ठ 33, 34
3. विजय यमला, लोक गायक, 20 सितम्बर, 2018, 10:30
4. अली अकबर खान, संगीत निर्देशक, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, 20 सितम्बर, 2018, समय : 12:30
5. उजागर सिंह अन्टाल (संगीत अध्यापक) 20 सितम्बर, 2018,13.00
6. प्रोफेसर जतिन्द्र कौर, खालसा कॉलेज फॉर वूमैन, अमृतसर, 14 मई 2020, 13:00
7. प्रोफेसर शरन कौर, गवर्नमेंट कॉलेज, लुधियाना, 15 मई 2020, 15:00